PAPER NAME

सुविधाभोगी व सुविधावंचित समू
ह के किशोर विद्यार्थियों की नै
राश्य.docx

WORD COUNT

3038 Words

CHARACTER COUNT

13477 Characters

PAGE COUNT

17 Pages

FILE SIZE

421.9KB

SUBMISSION DATE

Jul 13, 2026 12:57 PM GMT+5:30

REPORT DATE

Jul 13, 2026 12:58 PM GMT+5:30

0% Overall Similarity

This submission did not match any of the content we compared it against.

- 0% Internet database
- 0% Publications database
- Crossref database
- Crossref Posted Content database
- 0% Submitted Works database

Excluded from Similarity Report

- Bibliographic material
- Quoted material
- Cited material
- Small Matches (Less then 14 words)

सुविधाभोगी व सुविधावंचित समूह के किशोर विद्यार्थियों की नैराश्य , आत्मसंप्रत्यय एवं शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डा. जगदीश कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर

बी . एड . विभाग

श्री गांधी पी.जी.कॉलेज,

मॉलटारी , आजमगढ़

सारांश

भारतीय समाज में वर्गों की एक श्रेणी है , जिसमे कुछ वर्ग ऊपर , कुछ वर्ग मध्यम एवं कुछ वर्ग निम्नतम स्थान पर हैं। उच्च वर्ग के लोगों की सामाजिक प्रतिष्ठा एवं शक्ति अन्य वर्गों की तुलना में सर्वाधिक होती है। निम्न वर्ग की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वे कई प्रकार की सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं। आज का बालक कल के समाज का जिम्मेदार नागरिक है। समाज को उससे बड़ी बड़ी आशाएं होती है। उसे जीवन में आने वाली अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। भारत में विभिन्न प्रकार की समस्याएं व्याप्त हैं और इन सभी समस्याओं को दूर करने में शिक्षा का योगदान महत्वपूर्ण होता है। शिक्षा के इसी महत्व के मद्देनजर सरकार द्वारा विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं जिससे बच्चे शिक्षित होकर देश के विकास में

अपना योगदान दे सकें। परन्तु दुर्भाग्य से कुछ विद्यार्थी ऐसे भी देखने को मिलते हैं जो मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित होते हैं जिसके वजह से वे कुंठाग्रस्त हो जाते है , फलस्वरूप उनकी शैक्षिक निष्पत्ति प्रभावित होती है। प्रस्तुत शोध के द्वारा शोधार्थी यह देखने का प्रयास किया है कि निराशा का प्रभाव व्यक्ति के आत्मसंप्रत्यय एवं उसके शैक्षिक निष्पत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है। साथ ही कौन - कौन से उपाय करके उनकी इस समस्या को दूर किया जा सकता है अर्थात इस शोध के शैक्षिक निहितार्थ को बताना भी अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है।

मुख्य शब्द -सुविधाभोगी एवं सुविधावंचित विद्यार्थी , नैराश्य, आत्मसंप्रत्यय एवं शैक्षिक निष्पत्ति।

प्रस्तावना - किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा एक अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा ही एक ऐसा यंत्र है , जिसके माध्यम से सामाजिक , मनोवैज्ञानिक , आर्थिक , राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन किए जा सकते हैं। शिक्षा , व्यक्तित्व का निर्माण , व्यक्ति के चरित्र को उत्कृष्ट और व्यक्ति को संस्कारित बनाती है।

भारत का सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश भी अनेकताओं और बहुरूपताओं से भरा पड़ा है। परंतु फिर भी भारतीय जीवन व संस्कृति की अनेक अभिव्यक्तियों के पीछे आत्मा की एकता विद्यमान है। इस एकता व विविधता ने ही भारतीय समाज को निरंतरता प्रदान की है। भारतीय समाज कई वर्ग व श्रेणियों में विभाजित है , जिसमे कुछ वर्ग ऊपर , कुछ मध्यम एवं कुछ वर्ग निम्नतम स्थान पर हैं। उच्च वर्ग के लोगों की सामाजिक प्रतिष्ठा एवं शक्ति अन्य वर्गों की तुलना में सर्वाधिक होती है। उच्च वर्ग के लोगों के पास जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं प्रचुर मात्रा में होती है जबकि निम्न वर्ग

की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वे कई प्रकार की सुविधाओं को प्राप्त नहीं कर पाते हैं। 2011 की पिछली व्यापक जनगणना और तेंदुलकर समीति के रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 21.9 प्रतिशत लोग निम्न वर्ग के है जो गरीबी रेखा के नीचे जीवन व्यतीत करते हैं।

अतः सुविधाभोगी एवं सुविधावंचित वर्ग वर्तमान भारतीय समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, उपर्युक्त दोनों वर्गों की महत्ता को देखते हुए शोधार्थी ने दोनों वर्ग के किशोर बालकों के नैराश्य एवं आत्मसंप्रत्यय का शैक्षिक निष्पत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है? का अध्ययन किया।

अध्ययन की आवश्यकता - आज 21वीं सदी में ज्ञान के विस्फोट के साथ मानव व्यवहार की प्रक्रिया को उसकी रुचि, कार्यकुशलता तथा योग्यता आदि के साथ जोड़कर उसका वैज्ञानिक रूप में अध्ययन किया जाने लगा है। आज व्यक्ति के व्यतित्व , आत्मसंप्रत्यय तथा समायोजन का प्रश्न महत्वपूर्ण है। प्रारंभिक बाल्यकाल से अंत तक व्यक्ति में जो निराशाएं आती हैं उन निराशाओं का सामना व्यक्ति किस प्रकार करता है ? निराशा का प्रभाव व्यक्ति के जैविक , मनोवैज्ञानिक , सामाजिक तथा समायोजन पर किस प्रकार पड़ता है ? यह समायोजन सही रूप से तभी संभव होगा जब बालक को प्रारंभ से ही सही दिशा प्रदान की जाए।

आज का बालक कल के समाज के जिम्मेदार नागरिक हैं। समाज को उनसे बड़ी - बड़ी आशाएं हैं। जीवन में आने वाली अनेक चुनौतियां का उन्हें सामना करना पड़ता है। अतः सुविधाभोगी समूह व सुविधावनचित समूह के किशोर विद्यार्थियों के नैराश्य , आत्मसंप्रत्यय एवं शैक्षिक निष्पत्ति का प्रश्न शोधकर्ता की दृष्टि में महत्वपूर्ण हो जाता है ।

समस्या कथन - उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने निम्न प्रकार समस्या कथन को रखा है - " **सुविधाभोगी व सुविधावंचित समूह के किशोर विद्यार्थियों की नैराश्य , आत्मसंप्रत्यय एवं शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन** " ।

शोध में प्रयुक्त शब्दों की संक्रियात्मक परिभाषा -

1. **सुविधाभोगी समूह -** सुविधाभोगी समूह से तात्पर्य ऐसे समूह से है जिन्हे मूलभूत आवश्यकताओं जैसे - रोटी , कपड़ा , मकान आदि भौतिक सुख - सुविधाओं की कोई कमी नहीं होती । इस वर्ग के प्रत्येक व्यक्ति की मासिक आय (NSO के अनुसार) समस्त स्रोतों से 17000 रुपए से अधिक होती है ।

2. **सुविधावंचित समूह -** सुविधावंचित समूह से तात्पर्य ऐसे समूह से है जिन्हे मूलभूत आवश्यकताओं जैसे - रोटी , कपड़ा , मकान एवं भौतिक सुख - सुविधाएं अपर्याप्त रहती हैं । इस समूह के प्रत्येक व्यक्ति की मासिक आय (NSO के अनुसार) समस्त स्रोतों से 17000 रुपए से कम होती है ।

3. **किशोर विद्यार्थी -** किशोर विद्यार्थियों से हमारा तात्पर्य ऐसे विद्यार्थियों से है जो कक्षा 11 में अध्ययनरत हों और जिनकी उम्र 14 से 16 वर्ष के मध्य हो ।

4. **नैराश्य -** नैराश्य मानसिक तनाव पैदा करने की एक अवस्था है जिसकी उत्पत्ति इच्छा की पूर्ति में बाधा या निश्चित उद्देश्य के अभाव के कारण होती है ।

5. **आत्म - संप्रत्यय** - आत्म - संप्रत्यय का अर्थ स्वयं के बारे में व्यक्ति का विश्वास , विचार मूल्यांकन से है। मन में स्वत ही यह प्रश्न उठना कि " मैं क्या हूं ? मुझे अपने भावी जीवन में क्या करना है ? क्या बनना है ? आदि आत्म - संप्रत्यय कहलाता है।

6. **शैक्षिक - निष्पत्ति** - शैक्षिक निष्पत्ति से तात्पर्य है कि बालक किसी क्षेत्र विशेष में एक निश्चित समयावधि में सीखे गए ज्ञान , कौशल को ही शैक्षिक निष्पत्ति है।अर्थात् प्रस्तुत शोध में शैक्षिक निष्पत्ति से अभिप्राय न्यादर्श में सम्मिलित विद्यार्थियों के दसवीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा में प्राप्त कुल प्राप्तांको से है।

शोध का उद्देश्य -

1. सुविधाभोगी समूह व सुविधावंचित समूह के किशोर विद्यार्थियों के नैराश्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सुविधाभोगी समूह व सुविधावंचित समूह के किशोर विद्यार्थियों के आत्म - संप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. सुविधाभोगी समूह व सुविधावंचित समूह के किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. किशोर विद्यार्थियों की नैराश्य एवं आत्म - संप्रत्यय के मध्य सह -सम्बन्ध ज्ञात करना।

5. किशोर विद्यार्थियों की नैराश्य एवं शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सह - सम्बन्ध ज्ञात करना।
6. किशोर विद्यार्थियों के आत्म - संप्रत्यय एवं शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सह - सम्बन्ध ज्ञात करना।

शोध की परिकल्पनाएं -

1. सुविधाभोगी समूह व सुविधावंचित समूह के किशोर विद्यार्थियों के नैराश्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सुविधाभोगी समूह व सुविधावंचित समूह के किशोर विद्यार्थियों के आत्म - संप्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. सुविधाभोगी समूह व सुविधावंचित समूह के किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. किशोर विद्यार्थियों की नैराश्य एवं आत्म - संप्रत्यय के मध्य कोई सह -सम्बन्ध नहीं है।
5. किशोर विद्यार्थियों की नैराश्य एवं शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य कोई सह - सम्बन्ध नहीं है।
6. किशोर विद्यार्थियों के आत्म - संप्रत्यय एवं शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य कोई सह - सम्बन्ध नहीं है।

सीमांकन -

सुविधा की दृष्टि से शोधार्थी ने अपने अध्ययन को निम्न प्रकार सीमांकित किया है -

1. **प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश राज्य के मऊ जनपद के सदर तहसील तक ही सीमित है।**
2. **किशोर विद्यार्थियों के रूप में केवल कक्षा 11 में अध्ययनरत छात्र - छात्राओं को ही लिया गया है।**
3. **माध्यमिक विद्यालय के रूप में केवल राजकीय एवं सहायता प्राप्त अशासकीय माध्यमिक विद्यालय को ही लिया गया है।**
4. **शैक्षिक निष्पत्ति के रूप में छात्र - छात्राओं द्वारा कक्षा 10 में प्राप्त अंकों को आधार माना गया है।**

शोध विधि -

समग्र - प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर - प्रदेश राज्य के मऊ जिले के सदर तहसील के माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर - प्रदेश द्वारा संचालित शासकीय एवं सहायता प्राप्त अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11 के समस्त विद्यार्थी समग्र के रूप में है।

प्रतिदर्श - प्रतिदर्श के रूप में शोधार्थी ने समग्र से स्तरीय यादृच्छिक प्रतिदर्शन चयन विधि का प्रयोग करके कुल कुल 5 विद्यालयों से 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें से 100 छात्र - छात्राएं सुविधाभोगी समूह के एवं 100 छात्र - छात्राएं सुविधावंचित समूह से हैं, जिसका विवरण अधोलिखित है -

क्रम संख्या	विद्यालय का नाम	सुविधाभोगी समूह के विद्यार्थियों की संख्या	सुविधावंचित समूह के विद्यार्थियों की संख्या
1	डी. ए. वी. इंटर कॉलेज , मऊ	20	20
2	जीवन राम इंटर कॉलेज , मऊ	20	20
3	मुस्लिम इंटर कॉलेज , मऊ	20	20
4	राजकीय इंटर कॉलेज , मऊ	20	20
5	बापू इंटर कॉलेज , मऊ	20	20
	योग	100	100

प्रयुक्त विधि -

शोधकर्ता ने सुविधाभोगी एवं सुविधावंचित वर्ग के किशोर विद्यार्थियों के नैराश्य , आत्म- संप्रत्यय एवं शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन हेतु विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण -

1.नैराश्य मापनी - एन. एस. चौहान एवं डा . गोविंद तिवारी

2. आत्म संपत्यय मापनी - डा. राजकुमार सारस्वत

प्रयुक्त सांख्यिकी -

प्रस्तुत शोध कार्य में आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान , मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात एवं सह - सम्बन्ध का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्त संकलन विधि -

प्रदत्तों के संकलन हेतु सर्वप्रथम विद्यालय के प्रधानाचार्य से अनुमति लेकर कक्षा 11 में पढ़ने वाले समस्त छात्रों की सूची में से उनके माता - पिता की मासिक आय के आधार पर दो समूहों (सुविधाभोगी व सुविधावंचित) में विभक्त किया गया , तत्पश्चात उनमें से लाटरी विधि प्रयोग करके प्रत्येक समूह से 20 विद्यार्थियों का चयन कर लिया गया। इसके बाद प्रत्येक समूह के विद्यार्थियों को स्पष्ट निर्देश देकर उन्हें नैराश्य एवं आत्मसंप्रत्यय मापनी को दिया गया और एक निश्चित समय के पश्चात मापनी को एकत्रित कर लिया गया और उसका अंकन करके प्राप्त परिणामों का उद्देश्यवार विश्लेषण किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं परिणाम -

प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वप्रथम चयनित न्यादर्श पर नैराश्य मापनी, आत्म संप्रत्यय मापनी प्रशासित कर मानक के अनुसार उसका अंकन किया गया तथा प्राप्त प्राप्तांकों के मध्य

तुलना हेतु CR- परीक्षण एवं सह - सम्बन्ध गुणांक का मन ज्ञात किया गया। परीक्षण से प्राप्त परिणामों को तालिका 1 से 5 तक निम्नवत प्रस्तुत किया गया है -

तालिका - 1 : सुविधाभोगी समूह व सुविधावंचित समूह के किशोर विद्यार्थियों के नैराश्य का तुलनात्मक विवरण -

विद्यार्थियों के वर्ग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रांतिक अनुपात (CR)	सार्थकता स्तर
सुविधाभोगी समूह	100	25.65	6.23	2.58	.05 स्तर पर सार्थक
सुविधावंचित समूह	100	27.71	4.98		

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि सुविधावंचित समूह के विद्यार्थियों के नैराश्य मान का मध्यामन , सुविधाभोगी समूह के विद्यार्थियों के मध्यमन से अधिक है तथा इन दोनों समूहों का CR- मान .05 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मानो से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि सुविधाभोगी समूह की तुलना में सुविधावंचित समूह के विद्यार्थियों के नैराश्य मान अधिक है। अतः परिकल्पना - 1 "सुविधाभोगी समूह व सुविधावंचित समूह के किशोर विद्यार्थियों के नैराश्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत की जाति है। अतः कहा जा सकता है कि जिन विद्यार्थियों विद्यार्थियों के पास सुविधाएं कम होती हैं उनके अन्दर भविष्य को लेकर निराशा ज्यादा होता है।

तालिका - 2 : सुविधाभोगी समूह व सुविधावंचित समूह के किशोर विद्यार्थियों के आत्म - संप्रत्यय का तुलनात्मक विवरण -

विद्यार्थियों के वर्ग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रांतिक अनुपात (CR)	सार्थकता स्तर
सुविधाभोगी समूह	100	29.18	6.08	2.65	.05 स्तर पर सा
सुविधावंचित समूह	100	26.69	7.13		

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि सुविधाभोगी समूह के विद्यार्थियों का आत्म संप्रत्यय का मध्यमान सुविधावंचित समूह के विद्यार्थियों से अधिक है तथा इन दोनों समूहों का CR - मान .05 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मानों से अधिक है। अतः परिकल्पना - 2 " सुविधाभोगी समूह व सुविधावंचित समूह के किशोर विद्यार्थियों के आत्म - संप्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।" अस्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि आत्म - संप्रत्यय के विकास में सुख सुविधाओं का बड़ा योगदान होता है।

तालिका - 3 : सुविधाभोगी समूह व सुविधावंचित समूह के किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक विवरण -

विद्यार्थियों के वर्ग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	क्रांतिक अनुपात (CR)	सार्थकता स्तर
सुविधाभोगी समूह	100	66.56	21.52	2.82	.05 स्तर पर सार्थक
सुविधावंचित समूह	100	58.25	20.05		

तालिका - 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि सुविधाभोगी समूह के विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति का मध्यमान सुविधावंचित समूह के विद्यार्थियों से अधिक है तथा इन दोनों समूहों का CR - मान .05 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मानों से अधिक है । अतः परिकल्पना - 3 " सुविधाभोगी समूह व सुविधावंचित समूह के किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।" अस्वीकृत होती है और इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि जिन विद्यार्थियों के पास जरूरत की हर वस्तुएं उपलब्ध रहती हैं उनकी शैक्षिक निष्पत्ति अन्य की तुलना में अधिक होती है।

तालिका - 4 : किशोर विद्यार्थियों की नैराश्य एवं आत्म - संप्रत्यय के मध्य सह - सम्बन्ध का विवरण -

चर	आत्म - संप्रत्यय	नैराश्य

आत्म - संप्रत्यय	*	-.62
नैराश्य	-.62	*

तालिका - 4 से स्पष्ट है कि किशोर विद्यार्थियों के आत्म - संप्रत्यय एवं नैराश्य के मध्य सह - सम्बन्ध गुणांक का मान -.62 प्राप्त हुआ है , अतः कहा जा सकता है कि नैराश्य एवं आत्म - संप्रत्यय चारो के मध्य औसत स्तर का ऋणात्मक सह - सम्बन्ध है। अर्थात जिन विद्यार्थियों का आत्म - संप्रत्यय अधिक होता है ,उनके अन्दर निराशा कम होती है और निराशा अधिक रहने पर आत्म - संप्रत्यय काम होता है।

तालिका - 5 : किशोर विद्यार्थियों की नैराश्य एवं शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सह - सम्बन्ध का विवरण -

चर	**नैराश्य**	**शैक्षिक निष्पत्ति**
नैराश्य	*	-.78
शैक्षिक निष्पत्ति	-.78	*

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि किशोर विद्यार्थियों के नैराश्य एवं शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सह - सम्बन्ध गुणांक का मान -.78 प्राप्त हुआ है , अतः कहा जा सकता है कि नैराश्य एवं शैक्षिक निष्पत्ति चरों के मध्य उच्च ऋणात्मक सह - सम्बन्ध है अर्थात जो विद्यार्थी जितना अधिक नैराश्य से ग्रसित होते है उनकी शैक्षिक निष्पत्ति उतनी ही कम होगी।

तालिका - 6 : किशोर विद्यार्थियों की आत्म-संप्रत्यय एवं शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सह - सम्बन्ध का विवरण -

चर	आत्म - संप्रत्यय	शैक्षिक निष्पत्ति
आत्म - संप्रत्यय	*	.85
शैक्षिक निष्पत्ति	.85	*

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि किशोर विद्यार्थियों के आत्म - संप्रत्यय एवं शैक्षिक निष्पत्ति के मध्य सह-सम्बन्ध गुणांक का मान +.85 प्राप्त हुआ है , जो कि दोनो के मध्य उच्च स्तर का धनात्मक सह- सम्बंध है। अतः कहा जा सकता है कि जिन विद्यार्थियों का आत्म- संप्रत्यय उच्च होता है उनकी शैक्षिक निष्पत्ति भी उच्च होती है।

शोध निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों के विश्लेषण के उपरांत निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए -

1. **सुविधावंचित समूह के विद्यार्थियों में नैराश्य की मात्रा सुविधाभोगी समूह के विद्यार्थियों से अधिक पाया जाता है अर्थात जब व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती तो वह हमेशा तनावग्रस्त रहता है।**
2. **सुविधाभोगी समूह के विद्यार्थियों में आत्म संप्रत्यय सुविधावंचित समूह के विद्यार्थियों की अपेक्षा श्रेष्ठ है अर्थात मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होते रहने से व्यक्तियों के आत्म विश्वास में वृद्धि होती है।**

3. जिन विद्यार्थियों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से हो जाति है, उनका आत्म विश्वास अधिक होता है और वे तनावमुक्त होकर शिक्षा ग्रहण करते हैं फलस्वरूप उनकी शैक्षिक निष्पत्ति सुविधावंचित समूह के विद्यार्थियों से अधिक होती है।
4. प्रस्तुत शोध में यह भी पाया गया कि नैराश्य एवं आत्म संप्रत्यय के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध है अर्थात किन्ही कारणों से यदि व्यक्ति के अंडर निराशा, हताशा एवं चिन्ता रहती है और जितनी अधिक मात्रा में रहती है तो उसके अंदर आत्म विश्वास उसी अनुपात में कम होता है फलस्वरूप उनकी शैक्षिक निष्पत्ति भी कम देखने को मिलती है।
5. शोध में यह भी पाया गया कि शैक्षिक निष्पत्ति को उच्च बनाने के लिए किसी भी तरह से विद्यार्थियों का आत्म संप्रत्यय बढ़ाना होगा क्योंकि दोनों में धनात्मक सह सम्बन्ध पाया गया है।

शैक्षिक निहितार्थ :

1. विद्यालय में भेद - भाव रहित स्वतन्त्र वातावरण का निर्माण करना चाहिए जिससे सुविधा वंचित समूह के छात्र - छात्राओं का सर्वांगीण विकास हो सके।
2. सुविधावंचित समूह के विद्यार्थियों के आत्म विकास हेतु सद्भावनापूर्ण वातावरण तैयार किया जाय और उन्हें प्रोत्साहित किया जाय जिससे उनका शैक्षिक स्तर ऊंचा उठ सके।

3. सुविधावंचित समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति को प्रभावित करने वाले कारकों को खोजा जाना चाहिए तथा उनकी समस्याओं का समाधान करना चाहिए जिससे उनके शैक्षिक पिछड़ेपन को दूर किया जा सके।
4. सुविधावंचित समूह के विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्नयन हेतु रेमेडियल कक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए।
5. सुविधावंचित समूह के विद्यार्थियों को विद्यालय में होने वाली पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते रहना चाहिए जिससे उनका आत्म विश्वास एवं सामाजिक विकास हो सके।

संदर्भ सूची :

1. गुप्ता, एस.पी.(2011), "अनुसंधान संदर्शिका..." शारदा पुस्तक भवन , इलाहाबाद ।
2. गुप्ता, एस.पी. एवं अलका गुप्ता (2011)," उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान " , शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद।
3. डंगवाल, किरन लता (2000), " कक्षा पंचम के विद्यार्थियों में कुंठा प्रतिक्रिया तथा शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन " भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका ,लखनऊ पेज, 16 - 19
4. कुमार, दिनेश (2024) , आजमगढ़ जनपद में बी.एड. कक्षा में अध्ययनरत अनु.जाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की सा.आ.स्थिति का .... " शोध प्रबन्ध (बी. एड.) वी. ब.सिंह पूर्वांचल वि. वि. जौनपुर।

5. **कपिल एच.के. (2006) , " सांख्यिकी के मूल तत्व " विनोद पुस्तक मंदिर , आगरा।**
6. **कौल लोकेश (1984), " मैथडोलॉजी ऑफ एजुकेशन रिसर्च " विकास पब्लिकेशन हाउस प्रा. लि. , नई दिल्ली।**
7. **शर्मा सुभाष ,(2007) , " शिक्षा और समाज " प्रकाशन संस्थान , नई दिल्ली।**

0% Overall Similarity

NO MATCHES FOUND

This submission did not match any of the content we compared it against.